

गुरु नानक – सबद ८
तीरथ नावा जे तिस भावा विण भाणे कि नाइ करी ॥
जप, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, २

तीरथ नावा जे तिस भावा विण भाणे कि नाइ करी ॥
जेती सिरठ उपाई वेखा विण करमा कि मिलै लई ॥
मत विच रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥
गुरा इक देह बुझाई ॥
सभना जीआ का इक दाता सो मै विसर न जाई ॥ ६॥

सारः सचेतना एक परिवर्तनकारी यात्रा हो सकती है जो आलोचनात्मक सोच को निर्देशित करती है और करमों के प्रति जागरूकता बढ़ाती है। यह आत्म-चेतना को बढ़ावा देती है और केवल पारंपरिक प्रथाओं के पालन करने से अधिक आध्यात्मिक विकास से जोड़ती है।

तीरथ नावा जे तिस भावा विण भाणे कि नाइ करी ॥
अगर रस्म-पालन की पाबंदी अच्छाई का रास्ता दिखा सकती है तो इसका पालन करें; अगर रस्म परस्ती नेकी का साथ नहीं देती है तो उसमें शामिल न हों।

जेती सिरठ उपाई वेखा विण करमा कि मिलै लई ॥
सभी प्राणी प्रकृति द्वारा निर्मित हैं; बिना सचेतना के उन्हें क्या लाभ हो सकता है?

मत विच रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥
बुद्धि में बहुमूल्य खज्जाना होता है जिसकी स्वामित्व तभी प्राप्त किया जा सकता है जब सीखने को अपनाया जाए।

गुरा इक देह बुझाई ॥
वह ज्ञान जो अज्ञानता के अंधकार को दूर करता है, वही एकता की जागरूकता का प्रकाश प्रदान करता है।

सभना जीआ का इक दाता सो मै विसर न जाई ॥ ६॥

सभी प्राणियों का रचयिता एक ही है और मुझे इस सच को नहीं भूलना चाहिए । (६)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि सचेतना का अभ्यास करने से परस्पर जुड़ाव गहरा होता है । यह सच्ची और असली आत्म की खोज करने और एकता के दिव्य अलौकिक सार से जुड़ने में मदद करता है ।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com